छाया मत छूना

पठन सामग्री और भावार्थ

कविता की व्याख्य ा

(1)

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्रा-गंध पैफली मनभावनी;
तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
वुंफतल के पूफलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण-
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

शब्दार्थ - छाया = परछाईं, भ्रम, दुविधा, दूना = दुगुना, सुरंग = रंग-बिरंगी, सुधियाँ = यादें, सुहावनी = आनंद देने वाली, छवियों = चित्रों, चित्रा-गंध = चित्रा की याद के साथ-साथ उसके आस-पास की सभी चीशों की गंध का अनुभव, मनभावनी = मन को लुभाने वाली, यामिनी = तारों भरी चाँदनी रात, कुंतल = लंबे केश, छुअन = स्पर्श।

व्याख्या: कवि हम सब से कहते हैं कि अपने अतीत जीवन की यादों को बार-बार याद करने से हमारा मन और अधिक दुखी हो जाएगा। यह तो मानी हुई बात है कि समय ठहरता नहीं है। जो अभी है, वह भी अगले पल अतीत बन जाएगा। इसी प्रकार यदि हमने पीछे कभी कुछ सुख के पल बिताए हैं तो उन्हें याद करके हमें इस समय सुख का अनुभव नहीं होगा, बल्कि उनके न रहने का दुख हमें सालता रहेगा। हर व्यक्ति के जीवन में कुछ रंग-बिरंगी सुखद यादें रहती हैं, जिनके सहारे व्यक्ति अपने शेष जीवन को बिता देना चाहता है, किंतु कवि हमें सचेत करते हुए कहते हैं कि तारों भरी चाँदनी रात, जब हम प्रिया के संग रंगीन सपनों में खोए रहते हैं, वह बीत गई। अब तो केवल प्रिया के सुंदर केशों में गुँथे महकते फूलों की सुगंध की याद भर रह गई है। अब इस समय न तो प्रिया पास में है और न वे सुख के पल, किंतु इस वियोग की घड़ी में उस समय की सारी चीशों की यादें मधुर मनभावन सुगंध-सी हमारे मन में बसी हुई हैं। कवि उन यादों को कुरेदने को मना करते हैं क्योंकि अब तो वे पल वापस नहीं आएँगे, केवल हमारा वर्तमान दुखपूर्ण और भारी हो जाएगा। इसलिए कवि अतीत की छाया को छूने का निषेध करते हैं। पुरानी बातों की यादें वर्तमान के घावों को और हरा कर देती हैं, तन-मन और अधिक दुखी हो जाता है।

विशेष

1. कविता सरल व खड़ी बोली में लिखी गई है।
2. कहीं-कहीं तत्सम और तद्भव शब्दों के पुट मिलते हैं, जैसे- कुंतल, तन-सुगंध, यामिनी, ;तत्समद्ध, छुअन, दूना (तद्भव) आदि।
3. 'दुख दूना और सुरंग सुधियाँ सुहावनी', में अनुप्रास अलंकार की छटा दिखाई पड़ती है।
4. चित्रा-गंध में रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है।
5. 'तन-सुगंध्' सामासिक शब्द है।
6. सुंदर लययुक्त शब्दावली कविता के भावों को और अधिक वाघ्मय बनाती हैं।
7. कवि वर्तमान में जीने की प्रेरणा देते हैं।
8. कविता में छायावाद का पुट स्पष्टतः दिखाई पड़ता है।

(2)

यश है या न वैभव है, मान है न सरमायाऋ
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया!
प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू उसका कर पूजन-
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

शब्दार्थ: यश = प्रसिद्धि, वैभव = धन-संपत्ति, ऐश्वर्य, मान = सम्मान, सरमाया = पूँजी, मूल धन, भरमाया = भ्रम में डाला, प्रभुता = बड़प्पन, प्रभुता का शरण-¯बब = बड़प्पन का अहसास, मृगतृष्णा = कड़ी धूप में रेतीले मैदानों में जल के होने का अहसास, छलावा, चंद्रिका = चाँदनी, कृष्णा = काली, अंधकारमयी, यथार्थ = सत्य, वास्तविकता, सच्चाई।

व्याख्या: कवि कहते हैं कि लोग नाम-यश, मान, संपत्ति, धन-दौलत, ऐश्वर्य आदि के पीछे सारी जिंदगी भागते रहते हैं क्योंकि आम लोगों के लिए ये ही चीशें सुख देने वाली होती हैं। किंतु कवि कहते हैं कि जिस प्रकार रेगिस्तान में पानी की आस में पशु इधर से उधर भटकते रहते हैं और दूर कहीं सूर्य की तेज़ किरणों से उत्पन्न जल का आभास देखकर ठगे जाते हैं, ठीक उसी प्रकार हम सब मनुष्य भी सांसारिक सुखों के पीछे मृगतृष्णा के समान भागते रहते हैं। हम जितना अधिक यश, नाम, मान, धन-संपत्ति, वैभव, ऐश्वर्य और बड़प्पन की चाह करते हैं, उतना ही अधिक इन सब चीशों की चाहत बढ़ती जाती है। इस चाहत का कोई अंत नहीं। कवि कहते हैं कि सांसारिक सुखों के पीछे भागने से अच्छा अपने यथार्थ को स्वीकार करना है। जैसे हर चाँदनी रात के बाद एक बार अमावस्या की काली रात आती है, उसी प्रकार सुख-दुख का पहिया निरंतर चलता ही रहता है। सुख-दुख कुछ भी नित्य या स्थायी नहीं है। इसलिए कवि व्यक्ति को कठोर वास्तविकता के धरातल पर जीने की सलाह देते हैं। सच्चाई को स्वीकार करने में ही हमारी भलाई है, अन्यथा अतीत के सुखद क्षणों को वर्तमान में याद करते हुए वर्तमान के दुख को हम और बढ़ा लेंगे।

विशेष

1. कवि वर्तमान में जीने की सलाह देते हैं। यथार्थ को स्वीकार करने में ही हमारी भलाई है।
2. संस्कृत के तत्सम शब्दों का समुचित प्रयोग हुआ है। वैसे इसकी भाषा सहज-सरल खड़ी बोली है।
3. इस कविता में दार्शि नकता आरै छायावाद का पटु है। सुख-दुख के निरंतर गतिशील होने की बात बताई गई है।
4. चंद्रिका और अमावस्या (कृष्णा रात) की उपमा पद्यांश में अनोखा भाव भर देती है।
5. 'शरण-बिंब' में रूपक अलंकार है।
6. मृगतृष्णा का उदाहरण देकर कवि ने सब लोगों को यश, मान, धन-संपत्ति के पीछे भागने के लिए निषेध किया है।

(3)

दुविधा-हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं,
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।
दुख है न चाँद खिला शरद-रात आने पर,
क्या हुआ जो खिला पूफल रस-बसंत जाने पर?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

शब्दार्थ: दुविध-हत = दुविध में पँफसा हुआ, क्या करें और क्या न करें की स्थिति में होना, असमंजस में होना, पंथ = राह, रास्ता, देह = तन, शरीर, शरद = एक ट्टतु का नाम, रस-बसंत = रस से भरपूर मतवाली वसंत ट्टतु, वरण = चुनना, अपनाना।

व्याख्या: कवि कहते हैं कि मनुष्य सुख की आस में इधर-उधर भटकता रहता है, पर हमेशा उसे अपने जीवन में इच्छित वस्तु मिल नहीं जाती। जो कुछ उसे मिलता है, उससे उसका तन सुखी हो सकता है किंतु मन संतुष्ट नहीं होता। कवि कहते हैं कि मानव-मन के दुखों का अंत नहीं। एक पाने पर दूसरा पाने की लालसा जगती है, दूसरा पाने पर तीसरे की इच्छा होती है। इस प्रकार लोभी मन कभी सुखी नहीं होता। किसी भी प्रकार से जीवन-संघर्ष में विजयी होने का मन में साहस तो है, परंतु साथ में दुविधा की स्थिति भी बनी रहती है। कवि कहते हैं कि 'क्या करूँ और क्या न करूँ' वाली असमंजसपूर्ण स्थिति में व्यक्ति को कोई रास्ता नहीं सूझता और वह अधिक निराश हो जाता है।

कवि कहते हैं कि मनुष्य को यह कष्ट बार-बार सताता रहता है कि जो चीश उसे ठीक समय पर मिलनी थी, वह न मिल पाई। यौवनावस्था में प्रिय के सामीप्य का सुख मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल पाया। यदि बाद में वह सुख मिले तो क्या लाभ? 'का बरखा जब कृषि सुखाने' वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए कवि कहते हैं कि उचित समय में इच्छित वस्तु का मिलना ही वास्तव में सुखद होता है। इसके विपरीत, समय बीत जाने पर उसके मिलने से कुछ लाभ नहीं होता। जिस प्रकार शरद पू£णमा की रात को यदि चाँद न निकले तो शरद पू£णमा का सारा सौंदर्य और सारा महत्व समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार कवि के जीवन के स्व£णम काल में उन्हें सुख-संपदा नहीं मिली, इस बात का दुख उन्हें हमेशा सताता रहता है। मतवाली-रसभरी बसंत ट्टतु के बीत जाने पर यदि पूफल खिले तो क्या हुआ? बसंत तो रंग-बिरंगे

सुगंधित पूफलों की ट्टतु है। ऐसे समय यदि पूफल ही न हो तो वह केसी बसंत होगी? निश्चित ही वह मतवाली, सुवासित और सुखदायी न होगी।

इतना सब कुछ होने पर भी कवि निराश-हताश नहीं होते। अतीत में जो कुछ उन्हें मिलना चाहिए था, उसके न मिलने पर भी वे आँसू नहीं बहाते। कवि पूरी तरह से आशावादी दृष्टिकोण रखते हैं और अपने अतीत के दुखों को भुलाकर जो कुछ भी वर्तमान में मिलता है, उसे सहर्ष अपनाकर अपने वर्तमान तथा भविष्य को सुखी बनाने की नेक सलाह देते हैं। इसीलिए कवि गिरिजा कुमार माथुर बारंबार हमें अतीत की स्मृति रूपी परछाईं को छूने से मना करते हैं। उनके अनुसार अतीत के सुखद क्षणों की स्मृतियाँ हमारे वर्तमान समय के दुखों को दुगुना कर देती हैं। इसलिए उन्हें भुलाना ही बेहतर है।

विशेष

1. सहज सरल खड़ी बोली में यह कविता लिखी गई है।
2. कहीं-कहीं संस्कृत के तत्सम शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। जैसे- दुविधा-हत साहस।
3. कवि ने इस पद्यांश में चाँद, शरद पूनम की रात, रस-बसंत, फूलों का खिलना आदि प्रतीकों का सुंदर प्रयोग किया है।
4. प्रस्तुत पद्यांश में दार्शनिकता की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। साथ ही छायावाद का प्रभाव भी लक्षित होता है।
5. कवि पाठकों के मन में प्रतीकात्मक शैली द्वारा आशावादी दृष्टिकोण भर देना चाहते हैं।

कविता का सार

प्रस्तुत कविता में कवि ने मनुष्य को बीते लम्हों की याद ना कर भविष्य की ओर ध्यान देने को कहा है। कवि कहते हैं कि अपने अतीत को याद कर किसी मनुष्य का भला नही होता बल्कि मन और दुखी हो जाता है। हमारे जीवन में अनेक रंग-बिरंगी यादों की सुहावनी बेला आती है, जिनके सहारे व्यक्ति अपना सारा जीवन बिता देना चाहता है परन्तु कवि कहते हैं कि अब वे क्षण बीत चुके हैं। भले ही उनकी खुशबू चारों तरफ फैली हुई है परन्तु अब वह चांदनी रात समाप्त हो चुकी है, अब प्रिय की सुगंध ही मात्र शेष रह गई है। प्रिय के साथ बिताए वह सुन्दर क्षण अब मात्र यादों में ही रह गए हैं। वे कहते हैं कि अब उन्हें याद करने से हमें सिर्फ दुःख ही मिलेगा, वे पल वापस नही आएंगे।

कवि कहते हैं मनुष्य सारी जिंदगी यश,धन-दौलत, मान, ऐश्वर्य के पीछे भागते हुए बिता देता है जो की केवल एक भ्रम है। कवि कहते हैं ये ठीक उसी प्रकार है जैसे रेगिस्तान में पशु पानी की तलाश में भटकता रहता है परन्तु दूर कहीं सूर्य की किरणों द्वारा उत्पन्न हुए जल के आभास से ठगा जाता है। वे कहते हैं कि हम जितना मान-सम्मान, सम्पन्ति की चाह करते हैं उतना ही हमारी चाहत इसके प्रति बढ़ती जाती है, इसका कोई अंत नही है। जिस तरह हर चांदनी रात के बाद अमावस्या आती है उसी तरह सुख-दुःख का पहिया सदा निरंतर चलता रहता है। इसलिए कवि हमें धरातल पर जीने की सलाह देते हैं, सच्चाई को स्वीकारने में ही हमारी भलाई है। वर्ना अतीत के सुखों की यादों में हम वर्त्मान के दुखों को बढ़ा लेंगे।

कवि कहते हैं कि मनुष्य सदा दुविधा में फंसा रहता है जसके कारण उसे कोई रास्ता नही सूझता और वह अधिक निराश हो जाता है। जीवन में उसे जो कुछ उसे मिलता है उससे उसकी शारीरिक सुख तो मिल जाता है परन्तु मन संतुष्ट नही हो पाता। जिस प्रकार शरद पूर्णिमा की रात को चाँद न निकले तो शरद पूर्णिमा का सारा सौंदर्य और महत्व समाप्त हो जाता है उसी प्रकार अगर मनुष्य को जीवन में सुख-सम्पदा नहीं मिली तो इसका दुःख उसे जीवन भर सताता है। जैसे वसंत ऋतू में फूल न खिले तो

वह निश्चित ही मतवाली और सुखदायी ना होगी वैसे ही मनुष्य को अगर अतीत में जो कुछ उसे मिलना चाहिए था वह न मिले तो वह उदास हो जाता है इसलिए उन्हें भूलना ही बेहतर है।

कवि परिचय

गिरिजाकुमार माथुर

इनका जन्म सन 1918 में गुना, मध्य प्रदेश में हुआ था। इन्होने प्रारंभिक शिक्षा झांसी, उत्तर प्रदेश में ग्रहण करने के बाद एम.ए अंग्रेजी व एल.एल.बी की उपाधि लखनऊ से अर्जित की। शुरू में कुछ समय वकालत किया तथा बाद में दूरदर्शन और आकाशवाणी में कार्यरत हुए। इनकी मृत्यु 1994 में हुई।

प्रमुख कार्य

काव्य-संग्रह - नाश और निर्माण, धुप के धान, शिलापंख चमकीले, भीतरी नदी की यात्रा।
नाटक - जन्म-कैद
आलोचना - नयी कविता: सीमाएँ और सम्भावनाएँ।

कठिन शब्दों के अर्थ

1. दूना - दुगना
2. सुरंग - रंग-बिरंगी
3. सुधियाँ - यादें
4. मनभावनी - मन को लुभाने वाली
5. यामिनी - तारों भरी चांदनी रात
6. कुंतल - लम्बे केश
7. यश - प्रसिद्धि
8. सरमाया - पूँजी
9. भरमाया - भ्रम में डाला
10. प्रभुता का शरण बिम्ब - बड़प्पन का अहसास
11. मृगतृष्णा - कड़ी धूप में रेतीले मैदानों में जल के होने का छलावा
12. चन्द्रिका - चांदनी
13. कृष्णा - काली
14. यथार्थ - सत्य
15. दुविधा हत - दुविधा में फँसा हुआ
16. पंथ - राह
17. रस-बसंत - रस से भरपूर मतवाली वसंत ऋतू।
18. वरण - अपनाना